अनुवाद

वह उस श्रद्धा से उसी देवता का आराधन करके अपने इच्छित भोगों को प्राप्त करता है। परन्तु वास्तव में इन भोगों को देने वाला मैं ही हूँ।।२२।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् की अनुमति के बिना देवता अपने भक्तों को किसी भी वरदान से पुरस्कृत नहीं कर सकते । जीव भूल सकता है कि सब कुछ परमेश्वर श्रीकृष्ण की सम्पत्ति है, परन्तु देवता यह कभी नहीं भूलते । अतः देवाराधना और उससे होने वाली अभीष्ट-सिद्धि के कारण देवता नहीं हैं, श्रीभगवान् की व्यवस्था से ही यह होता है । अल्पज्ञ जीव यह नहीं जानता और इसलिए मूर्खतावश तुच्छ भोगों के लिए देवताओं की शरण में जाया करता है । इसके विपरीत शुद्ध भक्त चाहे किसी अभाव में भी क्यों न हो, केवल श्रीभगवान् से प्रार्थना करता है। वास्तव में तो विषयसुख की याचना करना शुद्ध भक्त का लक्षण ही नहीं है। कामतृप्ति की उन्मत्तता के कारण जीव देवताओं के पास जाता है । यह तब होता है जब वह किसी अनर्थ की वाञ्छा करे, जिसकी पूर्ति भगवान् नहीं करते । 'चैतन्य चरितामृत' में कहा है कि भगवान् की आराधना करते हुए भी जिसे विषयसुख की अभिलाषा है, उस की इच्छाएँ परस्पर विरुद्ध (असंगत) हैं। देवोपासना भगवद्भक्तियोग से बराबर नहीं हो सकती; देवोपासना प्राकृत है, जबकि भगवदुपासना पूर्ण रूप से अप्राकृत है।

अपने घर—श्रीभगवान् के धाम को लौटने के अभिलाषी जीवों के लिए विषयवासना विघ्नकारी है। अतएव शुद्ध भक्त को वे प्राकृत भोग प्रदान नहीं किए जाते, जिनकी इच्छा वे अल्पज्ञ जीव करते हैं, जो भगवद्भक्तियोग की उपेक्षा कर प्राकृत-जगत् के देवताओं की उपासना में संलग्न रहते हैं।

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि।।२३।।

अन्तवत्=सीमित और नश्वर; **तु**=परन्तु; **फलम्**=फल; **तेषाम्**=उन; **तत्**=वह; **भवति**=होता है; **अल्पमेधसाम्**=अल्पज्ञों का; **देवान्**=देवलोकों को; **देवयजः**=देवोपासक; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **मत्**=मेरे; **भक्ताः**=भक्त; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **माम्**=मुझ को; **अपि**=ही।

अनुवाद

परन्तु उन अल्पबुद्धि मनुष्यों को देवोपासना से सीमित और क्षणभंगुर फल ही होता है। देवोपासक देवलोकों को जाते हैं, जबकि मेरे भक्त अन्त में मेरे परम धाम को प्राप्त होते हैं।।२३।।

तात्पर्य

गीता के कतिपय व्याख्याकारों के अनुसार देवोपासक को भी भगवत्प्राप्ति हो सकती है । परन्तु इस श्लोक से स्पष्ट है कि देवोपासक अपनी उपासना के अनुसार